संगीतानुभव.

प्रथमदर्शन.

(लेखनविधिपूर्वक)

आ पुस्तक

प्रोफेसर मौलाबक्ष घीशेखान

एओए

श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा गायकवाड

सेनाखासखेल समशेर बहादुर

एमनी हुकमथी,

मुंबईमां

जाईंट स्टाक प्रिंटिग प्रेस

तथा

शहर वडोदरामां

बडोदावत्सल छापखानामां छाप्युं.

संवत् १९४४.

सन १८८८.

अनुक्रमणिका.



क्रम.	विषयो.	पृष्ट.

प्रस्तावना



संगीतशास्त्रनो हिंदुस्तानमां पूर्वे घेर घेर अभ्यास थतो एम कहेवाय छे. हाल जेम यूरोप खंडमां गायन ए केळवणीनुं भूषण गणाय छे, तेम पूर्वे आपणा देशमांपण ते केळवणीनुं भूषण गणातुं हतुं. गृहस्थोनी स्त्रीयो गावा बजावामां अने नृत्य करवामां खुशीथी भाग लेती हती. अने तेथी तेमनी वाहवाह थती. योगी अने भोगी बंनेने गायन सुखदायक मानवामां आवतुं, एटले ते इहलोक ने परलोक माटे यथार्थरीते कल्याणकारी गणातुं.

जे वखते गायननो शोख आटलो सामान्य हतो, ते वखते ए मनोरंजक ने उपयोगी कळानुं शास्त्रीयरीते बंधारण बांधी तेने परिपूर्ण करवा विद्वानोए यत्न कर्युं. संगीतशास्त्र उपर घणा ग्रंथो रचाया. पिंगळना वृत्तोनी पेठे गायनना रागो असंख्य उपजाववामां आव्या. एटले पिंगळमां जेम मात्रा, मेरु, पताकादि गणितभाग दाखल थयो छे, तेवोज गणितभाग गायनमां पण समायोछे. नवां नवां अनेक तरेहनां वाजित्रो बजाववामाटे बनाववामां आव्यां अने नृत्य कळानुं बंधारण पण शास्त्रीयरीते बंधायुं.

हुन्नर कळाना शोधे करीने यूरोपखंडमां अनेक तरेहनां बारीक वाद्य बनाववामां आव्यां छे. आपणां वाद्य करतां ते चढियातां थयां छे एम कहेवाय छे; तथापि गायननुं शास्त्रीय बंधारणतो आपणुंज चढियातुं छे, एमां संशय नथी.

एम छतां सांप्रतकाळमां आपणे अहीं प्राचीन बीजी विद्याकळानी माफक गायननी पण माठी दशा थई गई छे. संगीतशास्त्रनो सारो अभ्यास कर्यो होय एवां मनुष्य क्वचितज मळी आवे छे. गावा बजाववानी कळा जाणनाराज थोडा होय छे, तो तेनुं शास्त्र जाणनारानी शी वात करवी? गायन ए गृहस्थाइनुं लक्षण नीकळी गयुं. तेनो अभ्यास करनारा उलटा निंदावा लाग्या.

घणी खरी कोमोमां स्त्रीवर्गने गायन शीखवानुं बंध पड्युं, अने नृत्यकळा तो घणुं करीने सर्व कोममां बंध थई. आ आनंददायक कळानो वास वेश्याओने घेर थयो. गावुं बजाववुं ए गंधर्व अथवा गवाइयानुं काम छे एम मनावा लाग्युं. आथी संसारनुं सुख अने परलोकमां कल्याण करनार एक मोटुं साधन माठे भाग्ये आपणे खोई दीधुं छे, एम कहेवुं जोइए.

दीपकथी दाझेला तानसेनने गुजरातनी एक बाईए मल्हार गाई शीतळ कर्यो हतो एम कहेवाय छे. ते गुजरातमां हिंदुस्ताना बीजा प्रांतो करतां गायननो अनादर वधारे जोवामां आवे, ए दिलगीरी भरेलुं छे. उत्तर हिंदुस्तान अने महाराष्ट्रमां हजी गायन उपर वधारे शोख छे. तो पण त्यां गायननो शास्त्रीयरीते अभ्यास थोडोज थाय छे. हाल फक्त कर्णाटक भणी ए विद्यानी तालीम चडती रीते अपाय छे.

श्रीमंत महाराजा साहेबने आ उपयोगी विद्यानो जिर्णोद्धार करवानी इच्छा थतां, प्रख्यात प्रोफेसर **मौलाबक्ष**ना हाथ नीचे अजमाश दाखल एक वर्ग सन १८८६ ना फेब्रुआरीमां उघाडवामां आव्यो. ते ऐवा हेतुथी के शाळाओमां शीखनार विद्यार्थीओने गायननुं ज्ञान एक आभूषण तरीके आपवुं, लोकोमां गायननी अभिरुचि प्रकट करवी, अने संगीतशास्त्रनुं पुनर्जिवन करवा तजवीज करवी. ए वखते एवो भय राखवामां आवतो हतो के, गायनशाळामां थोडाज छोकरा दाखल थशे. तेथी फक्त १२ छोकरानो वर्ग बांधवो अने छोकरा तेमां दाखल थवा आकर्षाय माटे छ स्कॉलरशिपो राखवी. शरुमांज घणा छोकरा दाखल थया. अजमाशनी मुदत पूरी थतां कुशळगृहस्थोनी कमिटि निमी परीक्षा लेवामां आवी, तेनुं परिणाम संतोषकारक जणायाथी **श्रीमंत महाराजा साहेबे** खुशी थई गायन शाळाने जाथुनी मंजुरी आपी. **प्रोफेसर मौलाबक्षने** आ मेहेनतना बदलामां पगार बांधी आप्यो, तेमना हाथनीचे शिक्षको निम्या अने वाजित्रो वगेरेने माटे मंजुरी आपी. हाल आ शाळामां सो उपरांत छोकराओ छे; अने तेमना जूदा जूदा चार वर्ग करवामां आव्या छे.

प्रोफेसर मौलाबक्ष आखा हिंदुस्तानमां आ विद्याना शास्त्रीय ज्ञानने माटे प्रख्यात छे. अंग्रेजी गायननो तपास करतां आपणा शास्त्रमां तेमने एक बाबतनी खामी जणाई ते एके अंग्रेजीमां जेने नोटेशन कहे छे तेवी पद्धति गायननां पुस्तको लखवामां आपणे अहीं वापरवामां आवी नथी. तेथी गायनना अभ्यासीओने सघळो आधार पोताना उस्ताद उपर राखवो पडेछे. गायननो राग धाटी नोटेशन जोईने समजी शकाय, नोटेशन जोईने अमुक राग प्रमाणे बजावी शकाय तथा नोटेशन उपरथी अमुक राग परखी पण शकाय. अेथी ए बाबत गायन विद्यामां घणी उपयोगी गणाय. गायननां पुस्तकोमां करेला वर्णन उपरथी आवी वातो सरळताथी ध्यानमां आवी शके नहीं. केळवणीना काममां जेवुं "प्रदर्शन छे" तेवुं गायनमां नोटेशन छे. आपणा गायननो नोटेशन थई शके के नहीं ते उपर प्रोफेसर मौलाबक्षनुं लक्ष गयुं. तेमणे घणे प्रयासे ए काममां फतेह मेळवी. कैलासवासी **श्रीमंत खंडेराव महाराजना** वखतमां **प्रोफेसर मौलाबक्षे गायनाब्धिसेतु** नामे मासिक काढवा मांडयुं; परंतु ते थोडी मुदतमां मर्ण पाम्युं अने आज पर्यंत नोटेशनने प्रगट करवानी तक हाथ लागी नहीं. गायनशाळाना विद्यार्थीओने नोटेशन पद्धतिथी **प्रोफेसर मौलाबक्षे** शीखववा मांडयुं. प्राकृत भाषाओमां संगीत शास्त्रनां सारां पुस्तक न होवाथी तथा नोटेशननी पद्धति जाहेरमां लाववाने माटे **श्रीमंत महाराज साहेबे** ठराव कर्यो, के **प्रोफेसर मौलाबक्ष** संगीतशास्त्र पर नोटेशन साथे ग्रंथ तैयार करी छपावे तेने माटे जरुरी खरच मंजुर करवुं. संगीतानुभव प्रथम दर्शन ए **प्रोफेसर मौलाबक्षनुं** रचेलुं प्रथम पुस्तक छे. सीतार अने तबला उपर तेमणे पुस्तको तैयार कर्यां छे अने बीजां पुस्तको हवे पछी तैयार करवामां आवशे.

आ पुस्तक तेना नाम प्रमाणे मात्र प्रवेशक छे, एटले तेमां गायननां मूळ तत्वोनी फक्त टुकामां समज आपवामां आवी छे. संस्कृत तथा तैलंगी भाषामां थयेलां पुस्तकोनी तेमां सहायता लीधी छे.

सूचना.

आ पुस्तकमां पृष्ठ ११ मांना गृहना नामनी कलम पेहेली तथा बीजी, आ बंने कलम एकज समजवी; अने बीजी कलमने ठेकाणे नीचे लखेली कलम वांचवी.

"२ एकनो उच्चार थया पछी तरतज ताल पडे तो तेने विषमगृह कहे छे."

पृष्ठ १७ पंक्ति २४ मां प्लुतद्रुतनी आकृति (०ऽ।) आवी छे, ते अशुद्ध छे, ते ठेकाणे (०८) आवी आकृति समजवी.

पृष्ठ २६ पंक्ति १२ मां ❘* 'आवुं चिन्ह आवे तो शरुआतथी बे वार गावुं तथा वगाडवुं' एटलुंज छे. ते ठेकाणे 'आगळनो भाग पण बे वार गावो तथा वगाडवो एम समजवुं.'

पृष्ठ ३१ नी पेहेली चीजनी पेहेली पंक्तिमां स्तंभवाना चिन्हमांनो पांचमो स्तंभ न जोइए अने छट्ठो स्तंभ

| धऽप दं | ऽ ३ | आवो जोईए. अने आज चीजनी बीजी पंक्तिमां

प्रथम (ॆ) आवुं चिन्ह छे, ते ठेकाणे (*ॆ) आवुं चिन्ह समजवुं. अने एज पंक्तिमां छेवट | सृ गं | * | आवुं चिन्ह छे. ते ठेकाणे

| *स ८ गं | ३ | आवुं चिन्ह समजवुं.

मंगळाचरण.



दोहरा.

देश काल वस्तूवडे, जडे न जेनो अंत;
ते परब्रह्म स्वरूपने, प्रथम नमुं धरि खंत. ॥ १ ॥
तेथी बीजुं स्वरूप जे, सबळ ब्रह्म मुनि गाय;
वंदू जगकारण लही, जेथी विघ्न पळाय. ॥ २ ॥
शब्द प्रगट थई जेवडे, वहे विविध धरि रूप;
ते पदने प्रणमुं सदा, मानी इष्ट स्वरूप. ॥ ३ ॥
तनुधारी सहु जीवनुं, जीवन जेथीँ जणाय;
ध्वनीरूप ते शब्दने, नमूं गणी जगराय. ॥ ४ ॥
अर्थ अने रस आदिनुं, जीँवने थातुं भान;
वर्ण रूप ते शब्दनुं, इष्ट गणि धरूं ध्यान. ॥ ५ ॥
शब्दब्रह्म प्रगटी जगें, साधे सहु व्यवहार;
माटे जगदीश्वर गणी, नमन करूं आ वार. ॥ ६ ॥
जय जय जय जगदीश जय, शब्दब्रह्म देवेश;
साधकना जिव्हाग्रमां, राखो सदा प्रवेश. ॥ ७ ॥
विजय करे निज भक्तनो, उपास्यनी लहीँ रीत;
नित्ये करूं उपासना, दियो विजय धरि प्रीत. ॥ ८ ॥

ग्रंथप्रशंसा.

दोहरा.

उपासना विधि ग्रंथ आ, शब्दब्रह्मनी गाय;
उपास्य लहि मंगळ कर्‍युं, जे अति उचित गणाय. ॥१॥
लघु ग्रंथ संगीतनो, रच्यो धरी मन प्रीत;
ग्राहक गायक सुजन सौ, गाय विचारि सुगीत. ॥ २ ॥
महत्व आ संगीतनुं, लहे न पामर लोक;
पण तेनो विद्वान को, अंतर धरे न शोक. ॥ ३ ॥
वेद श्रुति स्मृति अने, शास्त्रादि सहु ग्रंथ;
श्रेष्ट लही संगीतने, वहे सदा ए पंथ. ॥ ४ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश वळीँ, सकळ देव जे अन्य;
नित्य चही संगीतने, वदे श्रवण करीँ धन्य. ॥ ५ ॥
महर्षि आदि महान जे, ते पण ले'ता स्वाद;
आज लगी जगमां नथी, अप्रिय कोने नाद. ॥ ६ ॥
बाल पशु पक्षी अने, वळी वृद्ध नर नार;
जाणे ना संगीत पण, श्रवण विषे तैयार. ॥ ७ ॥
प्रसन्न मन विषयी तणु, सुणतां सद्य जणाय;
निरोध वृत्ति भक्तनी, सुगीत गातां थाय. ॥ ८ ॥
सर्व तणी प्रीति तणो, गणी विषय संगीत;
प्रीते रची प्रसिद्ध करुं, आ वांचो धरि चित्त. ॥ ९ ॥

श्लोक.

गीत वादित्र नृत्यानां त्रयं संगीत मुच्यते ॥
गानस्यात्र प्रधानत्वात्तत् संगीत मिती रितम् ॥ १ ॥

अर्थ—सारी रीते गावुं बजाववुं ने नाचवुं तेनुं नाम संगीत एटले गायन विद्या कहेवाय छे. केटलाक संगीतनो अर्थ फक्त गावुंज करे छे पण ते बराबर नथी. केम के संगीत ताल साथे करवुं होय, त्यारे गायननी सघळी रचनानो समास वाजींत्रोमां करी ते वाजींत्रो, उपयोगमां लेवां पडे छे, अने गावा बजाववानी क्रियानो ताद्दृष्य चितार सामा माणसोना मनपर, नाचथी सारी रीते आवी शके छे, माटे संगीत शब्दमां ए त्रण बाबतोनो समास थाय छे. ए त्रणे बाबतोमां गायन मुख्य छे, एटले मोघम रीते "गायन" कहेवाय तो ते ठीक छे. गावाथी रागनुं स्वरूप, बजाववाथी तालनुं स्वरूप अने नाचवाथी भावनुं स्वरूप मुख्यत्वे करीने जणाय छे, माटे त्रण मळीने संगीत विद्या थाय छे.

स्वरोने अमुक नियम प्रमाणे गोठवी उच्चारवा तेने गीत कहे छे.

गळामांथी नीकळता, अथवा बीजी तरेहथी बोलाता, स्वरो वाजींत्रोमांथी लय, ताल सहित हस्तक्रियावडे बतावी आपवा तेने बजाववुं कहे छे.

संगीतना भेद विषे.

संगीतविद्या अने संगीतकळा, एम संगीतना बे भाग छे. जे संगीतनी हरकोई चीज राग, स्वर, ताल, लय, अने

ग्रामने अनुसरी बनावी गावा बजाववा जेवी करी आपवी, तेनुं नाम संगीतविद्या कहेवाय छे. अने संगीतनी हरकोई चीज कवितादि रचनाना नियमप्रमाणे बनावी आपी होय तो ते प्रमाणे गाई, बजावी के नाची जाणवुं, तेनुं नाम संगीत-कळा कहेवाय छे.

श्लो

अशिरःकंपनोनं गहीनोहीनस्वरायितः ॥
रागमार्गलयाभिज्ञो त्रिस्थायिस्थापिकोविदः ॥ २ ॥
स्थायिविस्तार कुशलोभिनेयेचविशारदः ॥
सुस्वरस्तालनिपुणोरक्ति मार्गविचक्षणः ॥ १ ॥
अनाकुलःसुरूपीच स्वरालंकारसाधकः ॥
सभाभीरुःस्थिरश्चेति पाठकश्चोत्तमोमतः ॥ ४ ॥

अर्थ—उत्तम गायकनां लक्षण नीचे प्रमाणेः—

जे माथु धुणावनार न होय, शरीरना बधा अवयवोथी पूरो होय, नठारा रागवाळो न होय, राग, मार्ग तथा लयने जाणनारो होय, त्रण प्रकारना स्थायी स्वरोने स्थापन करवामां कुशल एटले स्थायीने फेलाववामां होंशियार होय, भाव बताववामां डाह्यो, सुस्वरनो, तालमां निपुण, रागना मार्गमां बुद्धिवान, अकळामण विनानो, सारा रूपवाळा स्वरोना अलंकारने बनावनार, सभाक्षोभ वगरनो, अने दृढ मननो जे पुरुष होय तेने उत्तम गायक जाणवो.

स्वर विषे.

श्लोक.

आत्माविवक्ष माणोयं मनःप्रेरयतेमनः ॥
देहस्थवन्हिमांहन्ति सप्रेरयतिमारुतम् ॥ ५ ॥
ब्रह्मग्रन्थीस्थितः सोऽथक्रमाधूर्ध्वपथेचरन् ॥
नाभित्हृत्कण्ठमूर्धास्येष्वा विर्भावयतेध्वनिम् ॥ ६ ॥

अर्थ—बोलवानी जीवात्मा अंतःकर्णने प्रेरणा करे के ते अंतःकर्ण देहमां रहेला जठराग्निने प्रेरे छे ने ए अग्नि, नाभिनी नीचे चार आंगळने अंतरे रहेली ब्रह्मग्रंथीमांना वायुने प्रेरणा करे छे, एटले ते वायु नाभि, हृदय, कंठ, मस्तक, अने मुख, एमां अनुक्रमे चालतो चालतो शब्दने प्रगट करे छे. शब्द एटले नाद कहेवाय छे. नाद एमां नकार अने दकार अनुक्रमे वायु तथा अग्निना अक्षरो छे. कह्युं छे केः—

श्लोक.

नकारंप्राणनामानंदकारमनलंविदुः ॥
जातःप्राणाग्निसंयोगस्तेननादोभिधीयते ॥ ७ ॥

अर्थ—नकारने प्राण अने दकारने अग्नि कहे छे. ए प्राणने अग्निनो संयोग थवाथी, नाद थाय छे. गायनमां नादने सूर अथवा स्वर कहे छे.

श्लोक.

स्वतोरंजयतिश्रोतृचित्तंसस्वरउच्यते ॥

अर्थ—पोतानी मेळे जे सांभळनाराना चित्तने खुश करे छे, तेज स्वरनी गणत्रीमां गणाय छे.

मुख्य स्वरो सात छे.

१ षड्ज—(नाभिमांथी उत्पन्न थाय छे).
२ ऋषभ—(त्द्दयमांथी उत्पन्न थाय छे.)
३ गांधार—(वक्षस्थळमांथी उत्पन्न थाय छे.)
४ मध्यम—(कंठमांथी उत्पन्न थाय छे.)
५ पंचम—(मुखमांथी उत्पन्न थाय छे.)
६ धैवत—(ताळुमांथी उत्पन्न थाय छे.)
७ निषाद—(अनुनासिक मिश्रीत मूर्धन्यमांथी उत्पन्न थाय छे.)

ए गायनना सात स्वरो संक्षेपमां बोलवा होय, त्यारे ते दरेकनो पेहेलो अक्षर संज्ञा तरीके लइ बोलाय छे. जेमकेः—

स, री, ग, म, प, ध, नी.

पशु पक्षीना अवाजमां पण ए साते स्वरो मालम पडछे.

श्लोक.

षड्जं मयूरो वदति गावो ऋषभ भाषिणः ॥
अजा विकौ तुगांधारं क्रौंचः क्वणतिमध्यमम् ॥ ९ ॥
पुष्प साधारणे कालेपिकः कूजाति पंचमम् ॥
धैवतं-हेषते वाजीनिंषादं बृंहतेगजः ॥ १० ॥

---

१ श्लोक—नासांकंठमुरस्तालु जिव्हादन्तांश्चसंस्पृशन् ॥
षड्जःसजायतेयस्मात् तस्मात्षड्जइतिस्मृतः ॥ ८ ॥

नाक, गळु, छाती, ताळवुं, जीभ ने दांत ए छ पदार्थथी पेदा थाय छे, माटे एने षड्ज कहे छे, ए प्रमाणे बीजा स्वरोनां नाम पाडेलां छे एम समजवुं.

२ त्हदय अने कंठ ए बेना वचला भागने वक्षस्थळ कहे छे.

अर्थ—ए साते स्वरोमां, षड्ज मोर बोले छे, गाय ऋषभस्वर बोले छे, बकरो तथा घेटो गांधार स्वर बोले छे, क्रौंच पक्षी मध्यम स्वर बोले छे, वसंत ऋतुमां कोयल पंचम स्वर बोले छे, घोडो धैवत स्वर अने हाथी निषाद स्वर बोले छे.

श्लोक.

अशीतिःसप्ततिःषष्टिश्चत्वारिंशच्चखाग्नयः ॥
विंशतिर्दशवर्षाणिषड्जादीनांवयःक्रमात् ॥ ११ ॥

अर्थ—षड्ज स्वर ऐंशी वर्षनी, ऋषभस्वर शीतेर वर्षनी, गांधार स्वर साठ वर्षनी, मध्यम स्वर चाळीस वर्षनी, पंचम स्वर त्रीश वर्षनी, धैवत स्वर वीश वर्षनी, अने निषाद दश वर्षनी, उमरे घणुंकरीने पूर्ण रीते नीकळी शके छे.

स्वरोना भेद तथा सप्तक विषे.

स्थायी स्वरो अने अस्थायी स्वरो एवा बे भेद छे. जे स्वरो स्थायी अथवा कायम रहे छे एटले पोतानी जग्या छोडता नथी, तेने स्थायी कहे छे. स्थायी स्वर फक्त बेज छे, षड्ज अने पंचम.

अने जे स्वरोमां कांइ फेरफार अथवा चडउतर थाय छे, तेने अस्थायी स्वरो कहे छे. अस्थायी स्वरो पांच छे. ऋषभ, गांधार, मध्यम, धैवत अने निषाद. तमाम अस्थायी स्वरोना बबे भेद छे. ए बबे भेद ऋषभ, गांधार, धैवत अने निषादना एक सरखा छे; अने मध्यमना जूदा छे. पेहेला चार अस्थायी स्वरोना भेदनां नाम—

१ तीव्र, २ जो कोमल. मध्यम स्वरना भेदनां नाम १ लो शुद्ध, २ जो तीव्र. कुदरती नियम प्रमाणे जे स्वर नीकळे छे, तेने शुद्ध स्वर कहे छे.

शुद्ध स्वरथी नीचा स्वरनुं नाम कोमल, अने उंचा स्वरोनुं नाम तीव्र छे. बे स्थायी स्वर, पांच अस्थायी स्वर अने पांच अस्थायीना पेटा स्वर मळी कूल बार स्वर नीचे प्रमाणे थाय छेः—

<table>
<tr><th>स्थायी</th><th colspan="2">अस्थायी</th><th colspan="2">अस्थायी</th><th colspan="2">अस्थायी</th><th>स्थायी</th><th colspan="2">अस्थायी</th><th colspan="2">अस्थायी</th></tr>
<tr><td>स</td><td colspan="2">री</td><td colspan="2">ग</td><td colspan="2">म</td><td>प</td><td colspan="2">ध</td><td colspan="2">नी</td></tr>
<tr><td>०</td><td>कोमल.</td><td>शुद्ध.</td><td>कोमल.</td><td>शुद्ध.</td><td>शुद्ध.</td><td>तीव्र.</td><td>०</td><td>कोमल.</td><td>शुद्ध.</td><td>कोमल.</td><td>शुद्ध.</td></tr>
</table>

सप्तक विषे.

साते स्वरोना समूहने सप्तक कहे छे. मुख्य त्रण सप्तक छे.

१ षड्ज अथवा नीचा सूरनुं सप्तक, जेने मंद्र कहे छे.

२ मध्यम अथवा उंचा स्वरनुं सप्तक, जेने मध्य कहे छे.

३ टीप अथवा उंचा स्वरनुं सप्तक, जेने तार कहे छे.

नाभिथी कंठ सुधी षड्जना अथवा नीचा स्वरना सप्तकनी मर्यादा छे, तेने मंद्र कहे छे, जेम,—

स़ री़ ग़ म़ प़ ध़ नी़

नीचो नहीं तेम उंचो नहीं पण मध्यम रीते अवाज लेवामां आवे ने जेनी हद कंठथी तालुसुधी होय छे, तेने मध्य अथवा स्वाभाविक सप्तक कहे छे. जेमके:—

स री ग म प ध नी

जेनी हद तालुथी मूर्धा सुधी होयछे तेने टीप अथवा उंचा अवाजनुं अथवा तारसप्तक कहेछे. जेमकेः—

स̅ री̅ ग̅ म̅ प̅ ध̅ नी̅

केटलाक त्रणने बदले साढात्रण, अथवा चार सप्तक गणेछे. ते एवी रीते केः—

अ. षड्जना पेहेला सप्तक करतां नीचा अवाजना स्वर अति प्रयासे लेछे पण ते पंचम करतां वधारे नीचे उतरी शक्ता नथी, माटे तेने तेनुं अर्धुं सप्तक कहेछे. जेमकेः—

स़ नी़ ध़ प़

ब. टीपना अवाज करतां उंचा अवाजना स्वर अति प्रयासे लेछे, पण ते पंचम करतां वधारे उंचो चढतो नथी, माटे तेने तेनुं अर्धुं सप्तक गणेछे. जेमकेः—

सँ रीँ गँ मँ पँ

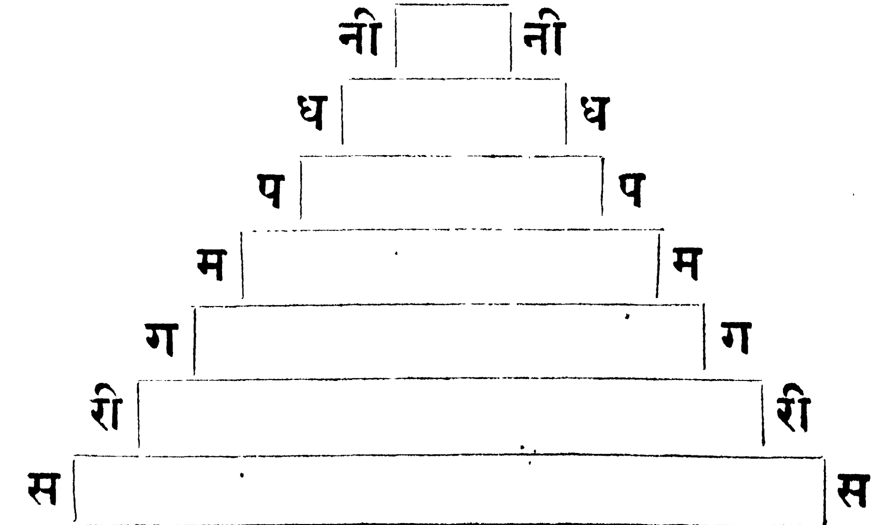
पाछला त्रण अने मंद्रथी नीचे स्वरनुं, अने तारथी चढता स्वरनुं चढ्युं लइए तो एकंदर चार* सप्तक थाय.

× साधारण वातचीत करवानी माफक ए सप्तक बोलवानी रीत छे, माटे तेने केटलाक प्राचारिक सप्तक पण कहेछे.

* केटलाएक लोको ए प्रमाणे स्वरना सात सप्तक बांधेछे. सात सप्तक कोईना गळामांथी नीकळी शक्तां नथी, माटे ते गावामां आवतां नथी, तेमज बीन, सतार वगेरे वाजींत्रोमांथी पण तेटलां सप्तक नीकळी शक्तां नथी. फक्त कानुन (स्वरमंडळ) नामना वाजींत्रमां ते उतारवानी जोगवाइछे. इंग्रेजोए ते परथी पियाना, नामे वाजींत्र बनाव्युं छे, ने तेमां साते सप्तक उतारेछे. कानुन तथा पियाना, वाजुं तारनु बनेछे, तेथी जेटला तार चढाववा धारीए तेटला चढीशके.

आरोह अने अवरोहविषे.

पेहेला स्वरनो अवाज नीकळे ते करतां बीजा स्वरनो अवाज जरा उंचो लेवो; त्रीजा स्वरनो अवाज ए करतां उंचो अने चोथा स्वरनो अवाज तेकरतां पण उंचो लेवो. ए प्रमाणे गायनमां चढतां अने उतरतां अवाज लेवामां आवेछे. तेमां एकने आरोही ने बीजाने अवरोही कहेछे. आरोहीनो अर्थ उंचे चढवुं थायछे, अने अवरोहीनो अर्थ नीचे उतरवुं थायछे. पेहेला स्वरथी छेल्ला स्वरसुधी चढता चढता अवाजे गाता के बजावता जवुं तेनुं नाम आरोही कहेवायछे. तेमज ए प्रमाणे चालीने छेवटना स्वरे आव्या पछी उलटी रीते एटले छेल्लेथी अनुक्रमे चालतां चालतां पेहेला स्वर सुधी उतरी आववुं तेनुं नाम अवरोही कहेवायछे. जेमकेः—



गृहविषे.

तालना टकोरा वगाडवाना ठेकाणाने अथवा जे ठेकाणे ताल रहेछे तेने गृह अथवा घर कहेछे. ताल वगाडवानां ठेकाणां जूदां जूदां छे, माटे तेनां चार गृह गणेलां छे.

गृहनां नाम.

१ समगृह, २ विषमगृह, ३ अतीतगृह अने ४ अनाघात.

१ ज्यां तालनो टकोरो वगाडवो जोइए त्यां बराबर वगाडे तो समगृह कहेवायछे.

२ एक कहेतानी साथे एक टकोरो वगाडे, जेमां तालनो टकोरो वगाडवो जोइए त्यां न वगाडतां बीजे ठेकाणे वगाडे तो विषमगृह थयुं कहेवायछे.

३ प्रथम ताल आप्या पछी तरतज उच्चारण थायछे त्यारे अतीतगृह कहेवायछे. हाथनो ठोको प्रथम मारी तरतज एक इत्यादि उच्चारण करवुं.

४ ज्यारे वगाडनार अथवा गानार बेमांथी एक पोतानी जूदी जूदी क्रियाओने लीधे; गावा बजाववामां मन चूकी, जूदा पडी जाय, त्यारे जे ठेकाणेथी चूक्या होय, अने पाछा शुद्ध तालनी जगोए आवे त्यारे, एवा भूलथी आवी गयेला ताल देवाना ठेकाणाने अनाघातगृह कहेवायछे.

जातिविषे.

ताल जे जे अंतरे देवायछे, ते ओळखवा सारु तेना जे वर्गो पाडेलाछे तेने जाति कहेछे. गायन करवानो आधार तालपर होयछे. जातिना पांच प्रकार छे. ते नीचे प्रमाणेः—

१ चतुश्रजातिनी मात्रा ४
२ तिश्रजातिनी मात्रा ३
३ मिश्रजातिनी मात्रा ७
४ खंड जातिनी मात्रा ५
५ संकिर्ण जातिनी मात्रा ९

चतुश्रजातिनी मात्रा गणतां जेटली वार लागे तेथी पोणा भागनी वार तिश्रजातिनी मात्रा गणवामां, पोणाबे घणी वार मिश्र जातिनी मात्रा गणवामां, सवाघणीवार खंड-जातिनी मात्रा गणवामां अने सवाबे घणीवार संकिर्ण जातिनी मात्रा गणवामां लागेछे. चतुश्रजातिमां आठ अडधी मात्रा आवे अथवा सोळ पा मात्राओ आवे तो पण तेज जाति कहेवायछे. ए प्रमाणे सर्व जातिनुं समजवुं.

अंगविषे.

अ. प्रत्येक विभागने अंग कहे छे.

ब. काळना जेटलां अंग छे ते परथी ते काळनी मात्राओ गणी शकाय छे.

क. मात्रा गणवानो आधार लय तथा मार्ग उपर रहेलो छे. तेथी जेवी लय तथा जे मार्ग होय ते प्रमाणे मात्रा गणाय छे.

मात्रा गणवानी रीत एक सरखी* नथी तोपण सामान्य नियम प्रमाणे लघुनी एक, गुरुनी बे, द्विगुरुनी चार, काकपदनी आठ, द्रुतनी अर्धी, अनाद्रुतनी पा मात्रा गणाय छे. अमे आ ग्रंथमां ते प्रमाणे मात्रानी गणतरी राखी छे. जेमकेः-

स ∧	काकपद= १
स स 8 8	द्विगुरु= २
ससस स ऽ ऽ ऽ ऽ	गुरु= ४
सससससससस	लघु= ८
स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स्	द्रुत= १६
स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स् स्स्स्स्	अनाद्रुत= ३२

* काळनुं स्थूलमान लइए तो तेनी एक मात्रा गणाय पण तेना भाग लइए तो बे, चार, आठ, सोळ ने बत्रीस मात्रा गणाय. जेम अत्यंत प्रतिविलंब (ठा.) अथवा काकपद मार्गनी लय होय तो काकपदनी एक मात्रा गणाय. ते करतां शीघ्र द्विगुरु मार्गनी लय होय तो द्विगुरुनी एक अने काकपदनी बे मात्रा गणाय. शीघ्र गुरुमार्गनी लय होय तो गुरुनी एक, द्विगुरुनी बे अने काकपदनी चार मात्रा गणाय. शीघ्र लघुमार्गनी लय होय तो लघुनी एक, गुरुनी बे, द्विगुरुनी चार अने काकपदनी आठ मात्रा गणायछे. शीघ्र द्रुतमार्गनी लय होय तो द्रुतनी एक, लघुनी बे, गुरुनी चार, द्विगुरुनी आठ अने काकपदनी सोळ गणाय. अने शीघ्र अनाद्रुतमार्गनी लय होय तो अनाद्रुतनी एक, द्रुतनी बे, लघुनी चार, गुरुनी आठ, द्विगुरुनी सोळ अने काकपदनी बत्रीस मात्राओ गणायछे. अने शब्दक्रिया तथा निःशब्द क्रियानो भेद जूदो पाडी मात्रा गणे तो चोसट मात्रा थायछे.

कळाविषे.

गावा अथवा वगाडवामां ध्वनिना प्रमाणने कळा कहे छे. तेना प्रकार बे छे. सूक्ष्म कळा अने स्थूल कळा. सूक्ष्म कळा एटले ध्वनि आसतेथी उठे छे, तेने सूक्ष्म कळा कहे छे. अने जे ठेकाणे भारी ध्वनि उठे छे तेने स्थूल कळा कहे छे.

लयविषे.

गानार अथवा वगाडनारे जे नियमने अनुसरीने एक चीज गावा अथवा वगाडवानी शरूआत करी होय, तेने पूरी करता सुधी तेज नियम प्रमाणे कायम राखवी तेने लय कहे छे.

काळ अने मार्गविषे.

काळ—वखत. गावा बजाववा अने नाच करवामां जे जे क्रियाओ करवामां आवे छे, ते दरेकमां केटली वार सुधी केवी रीते, कया स्वरनी तथा हाथ पगनी चाळवणी करवी; एटले कयो स्वर केटलो लांबो टुंको लेवो, अने कये ठेकाणे केटलो विराम लेवो, ए वगेरेनुं प्रमाण जे बतावे छे, तेने काळ कहे छे. ए काळनो उपयोग लय, ताळ, मार्ग वगेरेमां तथा स्वरोनुं उच्चारण करवामां थाय छे. जेमके ठरावीने गावुं, उतावळे गावुं अने बहु ठरावी नहीं तेम बहु उतावळे नहीं ए रीते गावुं. ए उपरथी एकंदर काळना त्रण भाग पडे छे, अने तेना पेटा भाग बे थाय छे; मळीने कूल पांच भाग ते नीचे प्रमाणेः—

मुख्य भाग

१ शुद्ध विलंबकाळ.

२ मध्यकाळ.

३ द्रुतकाळ.

पेटाभाग.

१ मध्यविलंब.

२ मध्यद्रुत.

शुद्ध विलंब काळमां पंदर सेकंड अथवा पा मिनिटमां सोळ गुरु अक्षरोनो उच्चार बरोबर करी शकाय छे. हवे तेटलाज अक्षरोनो जरा झडपथी उच्चार करीने दश सेकंडमां पूरो करीअे तो तेने मध्यविलंबकाळ प्रमाणे बोल्या एम कहेवाय. हवे तेथी अर्धा वखतमां एटले पांच सेकंडमां तेटलाज अक्षरनो उच्चार झट करीअे तो ते मध्यकाळमां बोल्या एम कहेवाय. मध्यथी अर्धा वखतमां जो बोलाय तो ते द्रुतगति थइ एम कहेवाय.

ड. काळनां मुख्य सोळ अंग छे. ते नीचे प्रमाणेः—

तालनां चिन्हो.

१ अनाद्रुत काळना अंगने विराम केहेछे. अने तेनी आकृति (◡) आछे. माटे तालमां ज्यां आवी आकृति आवे त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो वगाडवो.

२ द्रुतकाळना अंगने धृतांग कहेछे. अने तेनी आकृति (०) आछे. तालमां जे ठेकाणे आवी आकृति आवे त्यां एक बे गणी, एक कहेवानी साथे एक टकोरो वगाडवो, अने बे बोलती वखते कंइ वगाडवुं नहीं.

३ द्रुत तथा अनाद्रुत मळीने थएला काळने द्रुतविराम कहे छे. तेनी आकृति (४) आ छे. तालमां ज्यां आवी निशानी आवे त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो बजाववो, अने बे त्रण खाली गणवा.

४ लघु काळना अंगने लघु अंग कहे छे. तेनी आकृति (।) आ छे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो वगाडवो अने बे त्रण चार खाली गणवा.

५ लघु तथा अनाद्रुत मळीने थयेला काळने लघुविराम अंग कहे छे. तेनी आकृति (ꞏ) आछे. तालमां ज्यां एवी आकृति आवे त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो वगाडी बे, त्रण, चार, पांच, खाली गणवा.

६ लघु तथा द्रुत मळीने थयेला काळने लघुद्रुत अंग कहे छे. तेनी आकृति (ꞏ) आछे. तालमां जे ठेकाणे एवुं होय त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो बजावी बे, त्रण, चार, पांच, छ, खाली गणवा.

७ लघु द्रुत तथा अनाद्रुत मळीने थयेला काळने लघु द्रुत विराम अंग कहे छे. तेनी आकृति (ꞏ) आछे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां अेक कहेवानी साथे अेक टकोरो वगाडी बे, त्रण, चार, पांच, छ ने सात खाली गणवा.

८ गुरुकाळना अंगने गुरु अंग कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे. तालमां ज्यां अेवुं आवे त्यां अेक

तानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी आठ सुधी खाली गणवा.

९ गुरु तथा अनाद्रुतकाळ मळीने थयेला अंगने गुरु विराम अंग कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी नव सुधी खाली गणवा.

१० गुरु तथा द्रुतकाळ मळीने थयेला अंगने गुरुद्रुत अंग कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेवानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी दश सुधी खाली गणवा.

११ गुरुद्रुत तथा अनाद्रुतकाळ मळीने थयेला अंगने गुरुद्रुत विराम कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेतानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी अगीआर सुधी खाली गणवा.

१२ गुरु तथा लघु काळ मळीने थयेला अंगने प्लुत अंग कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेतानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी बारसुधी खाली गणवा.

१३ प्लुत तथा अनाद्रुतकाळ मळीने थयेला अंगने प्लुतविरामअंग कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे, तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेतानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी तेरसुधी खाली गणवा.

१४ प्लुत तथा द्रुतकाळ मळीने थयेला अंगने प्लुतद्रुत-अंग कहे छे. तेनी आकृति (ऽ) आछे. तालमां

ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेतानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी चौदसुधी खाली गणवा.

१५ प्लुतद्रुत तथा अनाद्रुतकाळ मळीने थयेला अंगने प्लुतद्रुतविराम कहे छे. तेनी आकृति ( ) आछे, तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक कहेतानी साथे एक टकोरो वगाडी बेथी पंदरसुधी खाली गणवा.

१६ काकपदकाळना अंगने काकपदअंग कहे छे. तेनी आकृति ( ) आछे. तालमां ज्यां एवुं आवे त्यां एक टकोरो वगाडी बेथी सोळसुधी खाली गणवा.

इ तालना टकोरा वगाडवानी रीत चार प्रकारनी छे. तेने गृह करीने कहे छे.

श्रुतिविषे

एकज स्वरनुं ध्वनिभेदथी श्रवण थवुं तेने ते स्वरनी श्रुति कहे छे. शुद्धथी चढतो एटले तीव्र अने उतरतो एटले कोमळ ए प्रमाणे एक स्वरनी बे श्रुतियो थइ. तेमां शुद्ध स्वरनी श्रुति मळीने त्रण थाय जेमकेः—षड्ज कायम स्वर छे, एटले तेनी एक श्रुति थइ. ऋषभनुं त्रण प्रकारे ध्वनि भेदथी श्रवण थाय छे. एटले पूर्णथी चडती अने उतरती श्रुतिथी अने पूर्णथी ते ए प्रमाणे गांधार वगरेनुं समजवुं. पंचम कायम स्वर छे, एटले एनी एक श्रुति गणी छे. ए रीते गणतां षड्ज एक ऋषभनी त्रण, गांधारनी त्रण, मध्यमनी बे, पंचमनी एक अने धैवत तथा निषादनी त्रण मळीने सोळ श्रुतियो थाय छे. आ श्रुतियोनो प्रचार दक्षिणमां हाल जोवामां आवे छे. उत्तर हिंदुस्तानमां

स्वरोनी बार श्रुतियो छे, एम मनाय छे. तेओ षड्ज अने पंचमनी एक श्रुति माने छे, अने ऋषभ वगेरे स्वरोनी बबे एटले कोमळ अने तीव्र ए प्रमाणे श्रुतियो गणे छे. एटले षड्ज तथा पंचमनी एक अने बाकीना पांच स्वरनी बबे ए प्रमाणे बार श्रुतियो माने छे.

श्रुतियोनी बाबतमां संस्कृत ग्रंथकारोनो अभिप्राय उपला बे अभिप्रायोथी तदन जूदोछे. तेओना करेला श्रुतिभेद घणा सूक्ष्मछे, अने हाल प्रचारमां ते जोवामां आवता नथी, तो पण तेमना अभिप्राय प्रमाणे श्रुतिभेदनी संख्या वधारे एटले बावीस सुधी थइ शकेछे. एटले षड्जनी चार, तेमां छेली बे श्रुतिमां ऋषभनुं मिश्रण थायछे. ऋषभनी त्रण श्रुतियो गणीछे, तेमां आखरनी श्रुतिमां गांधारनुं कांइक भान थायछे. गांधारनी बे श्रुतियो थायछे. मध्यमनी चार श्रुतियो थायछे. तेमां त्रीजी श्रुति ते प्रतिमध्यम अथवा तीव्रमध्यमनो ध्वनिछे. एटले शुद्धमध्यमनी बे अने प्रतिमध्यमनी बे ए प्रमाणे मध्यमनी चार श्रुति थइ. पंचमनी पण चार श्रुतियो गणीछे. तेमां त्रीजी श्रुतिये धैवतनुं मिश्रण थायछे. धैवतनी त्रण श्रुतियोछे. निषादनी श्रुतिओ बे छे. ए प्रमाणे शास्त्रकारोनुं मतछे. पण हालकाळे लोकोमां व्यवहार ते प्रमाणे थतो नथी, माटे ते विषे वधारे विस्तारथी आ स्थळे लखवुं अवश्यनुं गण्युं नथी. प्रचारमां प्रथम वर्णव्या प्रमाणे सोळ तथा बार श्रुतियो जोवामां आवेछे. तथी तेनी विशेष समज पडवा अर्थे आ नीचे कोष्टक आप्यांछे.

सोळ श्रुतीनुं कोष्टक.

एक	द्वयश्रुति	चतुश्रुति	षटश्रुति	द्वयश्रुति	द्वयश्रुति	द्वयश्रुति	एक	द्वय०	चतुश्रुति	षटश्रुति	द्वयश्रुति
स	री	री	री	ग	म	म	प	ध	ध	ध	नी
		ग	ग						नी	नी	
		शुद्ध	साधारण	अंतर	शुद्ध	प्रति			शुद्ध	कैषकी	काकली

बार श्रुतीनुं कोष्टक.

	को.	शु.	को.	शु.	शु.	तीव्र		को.	शु.	को.	शु.
स	री॰	री	ग॰	ग	म	म/	प	ध॰	ध	नी॰	नी

यतिविषे.

यति शब्द यम् धातु उपरथी नीकळ्यो छे. यम् एटले काबूमां राखवुं. स्वरने काबूमां राखी तेनुं पोतानी मरजी माफक आकर्षण करवुं तेने यति कहे छे. यतिना मुख्य प्रकार पांच छे. (१) समयति, (२) विषमयति, (३) गोपूच्छयति, (४) मृदंगयाति अने (५) प्लुतयाति.

समयतिनी अंदर एक स्वर पर ताल आवे, अने बीजा कोइ स्वरनो उच्चार थाय त्यांसुधी तेने खेंचवो, तेने समयति कहे छे. समयति ए मात्र बेज स्वरोनी मिलावट होय छे. तेमां प्रथमना स्वरनुं पूर्ण उच्चारण अने तेनी साथे बीजा स्वरना प्रथमना आकारनुं मात्र उच्चारण जोडीने करवुं, तेने समयति कहे छे. जेमकेः– सा़ री= सा़ आ=

विषमयाति बे स्वरो वचे तालस्थंब (उभीलीटी) राखेलो होय, त्यां प्रथम स्वरनो उच्चार करवो, अने बीजा स्वर उपर ताल आपवो; एटले विषमयति थाय छे. जेमकेः–

सा | री़ सा | आ़

गोपूच्छयति त्रण चार अथवा ते करतां वधारे स्वरो मळीने थाय छे. जेमकेः– सा री ग. सा री ग म. सारीगमपधनीसा.
आ आ आ

प्लुतयति–जे स्वरो अथवा वर्ण उपर प्लुतयतिनुं चिन्ह राख्युं होय, ते स्वरमांना अथवा वर्णमांना आदिस्वरनुं अथवा वर्णोच्चार करी ते पछीनानो उच्चारण अ. आ. उपर खटको

अथवा झोको देवो. आ यति घणुं करीने नीचली अने मध्यम सप्तकना स्वरोमां थायछे. जेमकेः—

सा री ग म प ध नी सां. सा री ग म प ध नी सा.

आ

मृदंगयति त्रण चार अथवा वधारे स्वरो मळीने थाय छे. मृदंगयतिमां प्रथम स्वरनो उच्चार साधारण करीने उत्तरोत्तर पोहोळो अवाज करतां जवो. ते जेटला स्वरो सुधी मृदंगयतिनो प्रथमनो भाग होय त्यांसुधी अनुक्रमे पोहोळो करी अने उत्तरार्धनो प्रथम प्रमाणे साधारण उच्चार करवो. जेमकेः—

सगाम सआअ

दशविध गमकविषे.

जेम शरीरनी संपूर्ण क्रियाना आधाररूप पंचप्राण छे, तेम संगीतमां संपूर्ण क्रियाना आधाररूप आ पंच यति भेद छे. यति भेदना यथार्थ स्वरूप तथा नामने न जाणीने आधुनिक घणाखरा गायक लोको वाद्य तथा कंठमां थती विविध क्रियाओने जूदा जूदा नामोथी ओळखे छे, तथा ओळखावे छे. ते हाल वपराता शब्दोनो आदि संगीतकारोए स्थापेला शब्दोमां जे प्रकारे समावेश थाय छे ते प्रकारने लोकनी भ्रांति टळवा अर्थे अत्रे आपवो योग्य धार्यो छे. जेम पंच प्राणोना सूक्ष्म क्रियाना भेदथी दश भेद मनायाछे, तेम आ पंच यतियोमां जेनो समावेश थयेलो छे, एवो दशविध गमकभेद भिन्न भिन्न सूक्ष्म क्रियाओने ओळखवा माटे सिद्ध करायोछे. तेथी ते पंच यतिरूप आ दशविध गमकनुं आधुनिक वपराता शब्दो तथा उदाहरण सहित कोष्टक आप्युंछे.

प्रथमथी वपरायला शब्दो.	पाछळथी वपरायला शब्दो.	उदाहरण.
आरोह	तान	स री ग म प ध नी सं
अवरोह	पलटा	सं नी ध प म ग री स
डालु	सूंथ	सगा समा सपा सधा
स्फुरित	जमजमा	रि सा ग री म गा प मा ध पा ग री
	मुर्की	आरोही– गरि सा मग री पम गा धप मा निध पा संनि धा
		अवरोही– गरि सा रिस नी सनि धा निध पा पम गा धप मा मग री गरि सा

गिटकरी
आरोही— सनिस रि, रिसरि ग, गरिग ध, मगम प, पमप ध, धपध नी, निधनि सां
अवरोही— सांनिध नी, निधप ध, धपम प, पमग म, मगरि ग, गरिस रि, रिसरि सा

कंपित	लरजा	सा सि सि सि सि रि री री री री
आहत	गमक	सरी रीग गम मप पध धनी नीसं
प्रत्याहत	घसीट	स ग री री म ग सं ध नी ध म प
त्रिपुश्रा	मसक	स ग री ग प म ध सं नी नी रीं सं
आन्दोल	मींड	स री ग री ग म ग म प म प ध प धा नी
मूर्छन	मूर्छना.	स | स, रीᵛ | री | री, गᵛ | ग | ग, मᵛ | म | म, पᵛ | प | प, धᵛ | ध | ध, नीᵛ | नी | नी, सᵛ

आ कोष्टकमां लखेला शब्दोथी वाद्य उपर जे जे कीया-ओ जेवी जेवी रीते करवानी छे, ते विशे सीतारना भागमां स्पष्ट करी लखेलुं छे, त्यां जोवुं.

चिन्होविषे.

गायन तथा वाद्ययंत्रमां जे जे क्रियाओ करवामां आवे छे, ते समजवा सारू जे जे चिन्हो आ पुस्तकमां मुकरर करेलां छे, ते नीचेप्रमाणे.

१ जे अक्षरनी जमणी बाजुए नानु सरखुं मींडु आवे तेने दोड अक्षर समजवो. जेमकेः—सु=सुस पेहलानो स., एक गुरू अने एक लघु अक्षरनी बरोबर छे. स.=स्स अथवा स्स् अथवा स्स्स्स्स् नी बरोबर छे.

२ सरीग | गरीस | जे. सरीग. अने, गरीस, नी वच्चे अने आखरे जे उभी लीटी छे तेने स्तंभ करीने कहे छे.

३ ∫∫୬ गायन तथा वाद्ययंत्रमां आ मुख्य चिन्ह छे. अने ते दरेक लीटीनी पेहेलां आवे छे. एवडे स्वरनो आरंभ मध्य सप्तकथी करवो एम समजवुं.

४ '।' आ चिन्हथी मंद्र (खरज) नी सप्तकथी आरंभ करवुं.

५. — ताल देवानुं आ चिन्ह छे.

६ ‐̣ समनुं आ चिन्ह छे, सम एटले टकोरो ते, तालना टकोरा बराबर देवो पण ज्यारे गावामां

तथा वाद्ययंत्रमां तानलईये तो ज्यां आवुं चिन्ह होय त्यां आवीने थोभवुं.

७ ⁷ खाली तालनुं आ चिन्ह छे, आवुं चिन्ह ज्यां होय त्यां ताळी न पाडवी पण जमीन तरफ हाथ करी देवो. जेमके सरीग | समग | सगप | आमां पेहेलां स।। उपर समनो टकोरो देवो. बीजा स।। उपर तालनो टकोरो देवो. अने त्रीजा स।। उपर खालीनो ताल देवो. एजरीते बधा ताल विषे समजवुं.

८ आ चिन्हनी डाबी बाजुए जेटला अक्षरो होय ते बेवार गावा.

९ आवुं चिन्ह आवे तो शरुआतथी आ चिन्ह सुधी बे वार गावुं तथा वगाडवुं.

१० आवुं चिन्ह आवे तो चीजनी पूर्णतानुं समजवुं.

११ सप आ चिन्हवाळा अक्षर (स्वर) पूर्ण अथवा शुद्ध[1] छे एम समजवुं.

१२ रीv आ चिन्हवाळा अक्षर (स्वर) कोमल छे एम समजवुं.

१३ ग/ आ चिन्हवाळा अक्षर (स्वर) तीव्र छे एम समजवुं.

---

१ जे चीजमां कंइपण चिन्ह करेलां न होय तेना बधा स्वर शुद्ध अथवा पूर्ण समजवा.

१४ * पेहेलां ज्यां आवुं चिन्ह होय अने पछी ए चिन्ह आवे तो शरुआतथी बीजा चिन्ह सुधी वगाडी पछी एकदम पेहेला चिन्हथी गावुं तथा वाद्ययंत्रमां वगाडवुं. जेमकेः–

स री ग म | *री ग म प | ग म प ध* | आमां पहेलेथी

ग, म, प, ध, सुधी गावुं तथा वगाडवुं. पछी एकदम री, ग, म, प, थी आरंभ करवो.

स्तंभवानां चिन्ह नीचे प्रमाणेः–

१५ ᐱ आवुं चिन्ह जे स्वरने करेलुं होय तो ते काकपद समजवुं.

१६ ८ आ चिन्हने प्लुत अथवा द्वयगुरु समजवुं.

१७ ऽ आ चिन्हने गुरु समजवुं.

१८ ˥ आ चिन्हने लघु समजवुं.

१९ ˥ आ चिन्हने द्रुत समजवुं.

२० ˥ अनाद्रुतनुं चिन्ह आछे एम समजवुं.

उपर प्रमाणे चिन्ह, चीजमां कोईपण टेकाणे लखेलां होय तो त्यां जेवां चिन्ह होय ते प्रमाणे थोभवुं जोईये. जेमकेः– स ˥ री ग आमां स नो उच्चार कर्‍या पछी एक लघु अक्षरने जेटलो वखत लागे छे तेटलुं थोभीने पछी री ग नो उच्चार करवो. एज प्रमाणे काकपदथी ते अनाद्रुत सुधी समजवुं.

रागविषे.

संगीतना नियम प्रमाणे सुस्वरोवडे रचित सुगीतने यथा-नियमे कंठ अथवा वाद्यथी लोकोना अथवा पोताना चित्तनी प्रसन्नता अर्थे काढवुं तेने राग कहे छे. संगीत तत्ववेत्ता पण रागनुं स्वरूप आप्रमाणे लखे छेः–

श्लोक

रंजकस्वरसंदर्भो रागइत्यभिधीयते

भावार्थ–हृदयने आनंद करनार स्वरोना समूहने राग कहिये-छीये. आ राग विषय घणो गहनछे. रागनुं स्वरूप नियमित स्वरोना कोमळ, शुद्ध अने तीव्रादि भेदवडे यथार्थ उच्चार थयेथी बंधायछे. रागनुं स्वरूप रचवुं तथा तेने समजवुं घणुं कठणछे. तो गळामांथी अथवा वाद्ययंत्रमांथी यथावत काढवुं ए अधिक कठण होय एमां कांई आश्चर्य नथी. स्वरोना सूक्ष्म भेदने गळाथी तथा वाद्ययंत्रथी काढवा तथा ओळखवामां पण ओछुं चातुर्य जोइयेछीए एम नथी. मात्र स्वरोनी ध्वनि उपरथीज रागनुं स्वरूप निश्चय करवामां आवेछे. तेथी घणे प्रसंगे ओछा अनुभववाळा पुरुषोथी रागो शुद्ध निकळी शकता नथी. वळी केटलाक रागोनां स्वरूप घणे अंशे एक बीजाने मळतां होयछे. मात्र किंचित् भेद होयछे. तेमां जे स्वरथी राग भेद थतो होय तेनुं यथार्थ स्वरूप कंठमां अथवा आंगळीना अ-

भ्यासमां सिध्ध थयेलुं होतुं नथी, तो ते सूक्ष्म भेदने प्रत्यक्ष करी शकता नथी. एथी रागोनां शुद्ध स्वरूप समजवामां निरंतर भ्रांति रहेछे. आ वगेरे अनेक कारणोथी आ काळे विविध स्थळोमां रागविषे पण घणा विवाद परस्पर चाले छे. रागना स्वरूप विषे मतभेद चालेछे. तेमज रागनां नामो विषे पण घणा मत भेदछे. विविध स्थळे मनाता विविध मत भेदना पृथक् पृथक् स्वरूपने ग्रंथ विस्तारना भयथी आस्थळे प्रतिपादन करवा योग्य गण्या नथी. अन्य ग्रंथमां प्रसंग परत्वे प्रसिद्ध करवामां आवशे. अत्रे मुख्यत्वे करीने जे रागो सांप्रत काळे विशेष प्रसिद्धछे तथा जे जे रागोना स्वरूपने जाणवाथी संगीत विद्यानो सारो प्रवेश गणी शकायछे, तेवा रागोना स्वरूपने समजाववा यत्न कर्युंछे.

सप्तकना आरंभना षड्ज थीते बीजा सप्तकना आरंभना शड्ज पर्यंतना आठ स्वरो जेमां, तीव्र, कोमळ आदि भेदथी आवता होय एवा रागोने संपूर्ण राग कहेछे. आ संपूर्ण राग कर्णाटक वगेरे स्थानोमां तो अद्यापि घणी जातना गवायछे. पण आ भागमां विशेष करीने मात्र बारज संपूर्ण राग प्रसिद्धरीते गवाता जणायछे. ते बारे रागनुं स्वरूप अत्रे जणाववाने एक कोष्टक आप्युंछे. तथा तेनी नीचे ते बारे रागनी एक एक चीज तेनी सरगम तथा ताल सहित आपीछे.

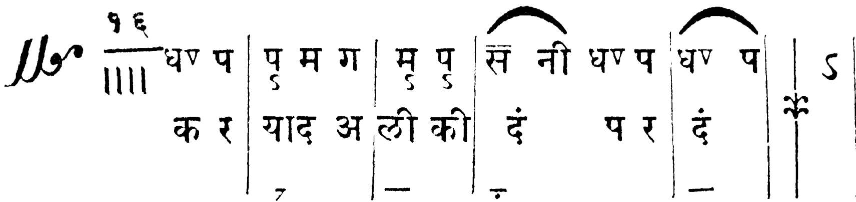
रागोनां नाम — कोमळ, शुद्ध अने तीव्र स्वरो.

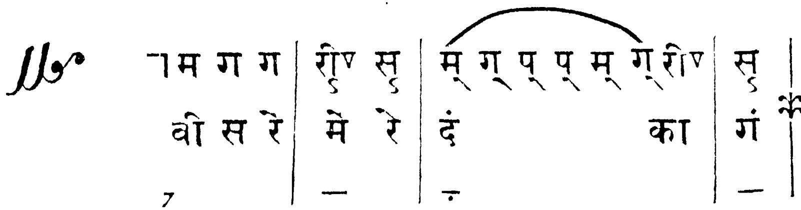
प्राचीन.	हालमा.		कोम.	शु.	को.	शु.	शु.	तीव्र.		को.	शु.	को.	शु.	
मायामाळवगोळ.	कालंगडा.	स	री˅	०	०	ग	म	०	प	ध˅	०	०	नी	स̄
हनमतोडी.	भैरवी.	स	री˅		ग˅		म		प	ध˅		नी˅		स̄
नठभैरवी.	सिंधभैरवी.	स		री	ग˅		म		प	ध˅		नी˅		स̄
शंकराभरण.	देवगीरीबीलावल	स		री		ग	म		प		ध		नी	स̄
हरिकामोदी.	झींजोटी.	स		री		ग	म		प		ध	नी˅		स̄
खरहरप्रिया.	काफी.	स		री	ग˅		म		प		ध	नी˅		स̄
कीरवाणी.	पीलु.	स		री	ग˅		म		प	ध˅			नी	स̄
शुभापंथवराळी.	तोडी.	स	री˅		ग˅			म/	प	ध˅			नी	स̄
शामकल्याण.	रातनीपूर्या.	स	री˅			ग		म/	प		ध		नी	स̄
मेचकल्याणी.	कल्याण.	स		री		ग		म/	प		ध		नी	स̄
कामवर्धनी.	दिवसनीपूर्या.	स	री˅			ग		म/	प	ध˅			नी	स̄
सूर्यकांता.	रामग्री.	स	री˅			ग	म		प		ध		नी	स̄

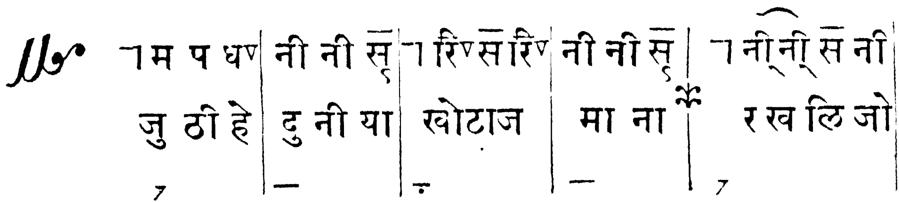
बार मेळनी चीजो.

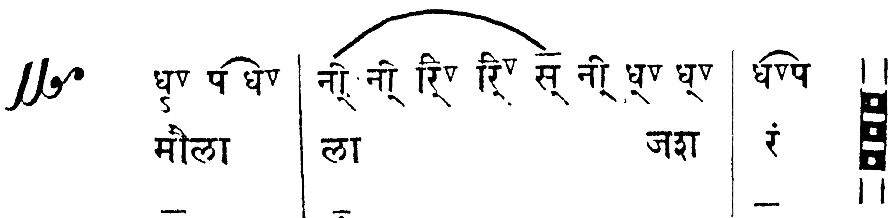
रा० कालंगडा १.

ताल चतुश्रजाति, तेताल, मध्यकाळ मात्रा १६.









रा० भैरवी २.

ताल चतुश्रजाति, तेताला, मध्यकाळ मात्रा १६.

१६	नीᵛ स गᵛ म	धᵛ प धᵛ	प नीᵛ धᵛ प	म प म धᵛ
||||	श्र व ण सु	न त मु	ख बो ल त	ब च न ग्रा
	—	÷	—	7

प म गᵛ रीᵛ	गᵛ प म धᵛ	प म गᵛ म	गᵛ रीᵛ स रीᵛ
ण सुं घ त	फु ल न रु	प दे ख त	द्र ग न ये
—	÷	—	7

नीᵛ स गᵛ म	धᵛ प धᵛ	प नीᵛ धᵛ प
श्र व ण सु	न त मु	ख बो ल त
—	÷	—

म धᵛ धᵛ नीᵛ	स रीᵛ स	रीᵛ स स	स नीᵛ धᵛ प
जा के च क्षु	है प्र .	का श अं	ध का र
7	—	÷	—

स गᵛ रीᵛ गᵛ	स रीᵛ नीᵛ स	धᵛ नीᵛ धᵛ प	म गᵛ गᵛ म
भ यो ना श	वा के ज हां	र हे त हां	सू र ज की
7	—	÷	—

गᵛ रीᵛ स रीᵛ
धु प हे
7

रा० सिंधभैरवी ३.

ताल चतुश्रजाति, झंपा मात्रा ७.

७ गᵛ री गᵛ	म प धᵛ प	म गᵛ प	म् नी्ᵛ ध्ᵛ प् म् ग्ᵛ री् स्	
ग्र ह न	क रे ज ब	सु म ति	मि ले त ब	
म प धᵛ	नीᵛ सं रीं सं	गᵛ रीं सं	नीᵛ ध्ᵛ प् म् ग्ᵛ री् स्	
सु गु न	बे ठे स ब	स म ज	क हे अ ब	

रा० शंकराभरण ४.

ताल चतुश्रजाति, तेताला, मध्यकाळ मात्रा १६.

१६/IIII स	री ग	स री ग म	प ध नी सं	सं	नी ध	सं नी ध प
यो	गी को	स ब सु ख	रु प य ह	रो	गी को	स ब दुः ख

म ग रि ग	
रु प य ह	

रा० झींजोटी ५.

ताल जलद दादरा, लघुद्रुतांग, मध्यमकाल मात्रा ६.

रीगमपम	धपमगरी	मपमगस	रीगमप
सृष्टिकरता	रबकेसिवा	को नहेक	होतोसही

ऽपधस	नीधधप	मपमगस	रीगमप
भ्रमसे	भूलपरी	ध्यानसेक	होतोसही

मपनीनीनी	सनीससस	ससनीनी	सरीसनीधप
परमेश्वर	परउपकारी	परब्रह्म	परहितकारी

पसनीस	धनीधपपप	मपमगस	रीगमप
आदिअंत	वो हिहेफिर	को नहेक	होतोसही

राग काफी ६.

ताल चतुश्रजाति, तेताल, विलंबगति मात्रा १६.

गरीरीगसा	रीममपसा	नीधमधप	गरीरीनीसा
रब्बरटेसे	पापकटेहे	लोभीकासब	मानघटेहे

स़ससरी़नी़	ध़ममप़स	नी़ध़म़धप	ग़रीरीनी़स़
जोनरसंगी	हेविषयोके	सोकेसेकर	पापझटे हे

रा० कल्याण ७.

ताल चतुश्र जाति, तेताला, मात्रा—१६.

१६

।।।। गग	री़ससनी़स़	री़री़ग़रीरी	ग़म॑म॑प़म॑	ग़री़स़
जग	में जन मी के	पा यो ग्या न न	तो दुःख के बि	सो वे गा.

गग	री़ससनी़स़	नी़धधप़म॑	ग़म॑म॑प़म॑	ग़री़स़
जग	मेजनमीके	ब्रह्मभजेगा	तोसुखसेतु	सोवेगा.

रा० तोडी ८.

ताल चतुश्रजाति, तेताला मात्रा १५.

१६				
	धॅ प म॑ प	म॑ गॅ म॑ प	म॑ गॅ रीॅ	सॖ नी स
	सु ख	दु ख	को स्व	रू प

गॅ म॑ धॅ	नी धॅ नी सं	सं नी धॅ	प म॑ गॅ म॑
जा न	त ना	मं द	म ति

म॑ धॅ	नी सं	धॅ नी गॅ	रीॅ सं नी धॅ
फे र	फे र	को न.	क हे

रीॅ स नी	धॅ प	म॑ गॅ म॑ नि	धॅ प गॅ म॑ धॅ नी
जा व	गा तु	अ धो	ग ती

रा० पीलु ९.

ताल तिश्रजातितेवरा मात्रा ७.

री गव री स नी री स | नी स नी धव म प
त जि के स ब म न | का म ना

नी स री गव म प
जो नि स्पृ ह

धव प म गव री स नी | म म प धव नी नी
हो य | अ हं का र म म

स गव रि स नी सा | स नी री स नी धव प
ता त जे. | ता में शां ति जुं

स नी स री स नी धव प धव प म गव री स
हो य

रा० रातनीपूर्या १०.

ताल तिश्र जाति, झपताला मात्रा १०.

स नी रि स | स नी री स | स प प म ध |
र ब तू | र ब तू | बो ल सु |

प म ग री सं |
वा

नी रि ग ग | म रि ग ग | प म ध प |
तो सो ही | च तु र सु | जा न प र |

नी ध प म ग |
बी न अ ति.

ग म प ध प | नी ध नी सं | सं नी ध प
प र ज नी | पीं ज रे | मो हे कू

प ध प म ग |
वा

॥७	प मि, ग प्	प प प प प	म, ध ध प नी	
	पा या उ	त्त म ज न म	ला य ले	
	᷊ —	७ —	᷊ —	
	ध प प म, ग	*		
	च्च प ल म न			
	७ —			

॥७	सृ स नी रीᵛ	सृ नी ध प	नी रीᵛ नी ध प	
	गा य गो	विं द ज न	जी त जू	
	᷊ —	७ —	᷊ —	
	म, ध म, ग रीᵛ	॥		
	वा.			
	७ —			

रा० दिवसनी पूर्या ११.

ताल चतुश्रजाति, चौंतालाचा, विलंभकाळ मात्रा १२

स्था० १२ धऽ पऽ मऽ पऽ | मऽ गऽ मऽ पऽ | मऽ गऽ रीऽ सऽ |
च ळ त न | सू चा ळ तू | ज ग मा ही |

गऽ मऽ धऽ नीऽ |
अं त मे फी |

अं० स ग री स | सनी धप मग रीस ||
रे गी त रे | मु ख शा ही ||